Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

हरियाणवी साहित्य में महाराणा प्रताप

Suman Rani*

M.A. (Hindi) NET, B.Ed., Sirsa

सार *– राजस्थान, राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत वीर भूमि है। जब हम इसके रंगमंच पर खड़े होकर विहंगम दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि राष्ट्रवादी चेतना के उत्थान में संतों-महात्माओं, पीरों-फकीरों, कलाकारों, साहित्यकारों, संगीतकारों, लोक गायकों, विद्वानों और वीर सेनानियों की एक समृद्ध परम्परा दिखाई देती है।*

----------------------------------x----------------------------------

इस देश के प्रति राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता के प्रति निष्ठावान अनेक राष्ट्र-पुत्र हुए हैं, जिनमें राजस्थान के रण-बांकुरे महाराणा प्रताप का नाम सर्वोपरि है। इस संदर्भ में भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश' की निम्न पंक्तियाँ महाराणा प्रताप के चरित्र पर ठीक बैठती हूँ-

''पानी में भी आग जो लगाते रणबीर यहाँ,

उनकी ही कही जाती जग में कहानी है।

वीर है महान वही, जिसमें स्वदेश हेतु

ध्यान आन-मान का औ नित्य स्वाभिमान है।

सिंह के समान जो न जानता झुकाना शीश,

पौरुष-पराक्रम की वही पहचान है।''1

बप्पारावण के प्रसिद्ध कुल में उत्पन्न, चित्तौड़ के अधिपति महाराणा, उदय सिंह के पुत्र एवं भारतीयों द्वारा 'हिन्दुओं के सूर्य' उपाधि से विभूषित महाराणा प्रताप के उदात्त चरित्र का यशोधन अनेक साहित्यकारों ने किया है। उन्होंने देश और धर्मरक्षा के लिए जो कष्ट सहे थे, इससे उनका नाम इतिहास प्रसिद्ध हो गया है। अकबर के कृपापात्र मानसिंह के विरोध के कारण उन्हें अनेक विपत्तियों का सामना करना पड़ा। हल्दीघाटी का अकबर और प्रताप के बीच हुआ युद्ध आज भी भारतीयों के हृदय में वीरता, जोश और उत्साह का संचार करता है। उनके उदात्त चरित्र को लेकर पं. श्यामनारायण पांडेय ने 'हल्दी घाटी' नामक महाकाव्य की रचना की। जयशंकर 'प्रसाद' ने भी 'महाराणा का महत्त्व' नामक काव्य लिखकर उनकी वीरता व धैर्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। महाराणा प्रताप के गौरव-गान में हरियाणा भी पीछे नहीं रहा है। इस धरा के अनेक कवियों व साहित्यकारों ने महाराणा प्रताप का यशोगान किया है, वह अनुपम है। यथा-

भारतभूषण 'सांघीवाल' कृत 'महाराणा प्रताप'

इस लोककाव्य में कविवर 'सांघीवाल' ने महाराणा प्रताप के यश और वीरता का भावपूर्ण शैली में वर्णन किया है। उनके अनुसार महाराणा प्रताप राष्ट्र-धर्म के रक्षक, इतिहास-प्रसिद्ध वीर सेनानी थे। उनका जन्म 9 मई, 1540 में माता जैवन्ती की कोख से हुआ। चित्तौड़ के अधिपति महाराजा उदयसिंह के वे पुत्र थे। कविवर सांघीवाल ने कथा के प्रारंभ में महाराणा प्रताप के जीवन-वृत्त की संक्षिप्त झलक निम्न काव्य-पंक्तियों में प्रस्तुत की है-

जिन वीरां ने दी कुर्बानी, चाहिए उनके गुण गाणा।

शिशोदिया वंश में हुए, वीर प्रताप महाराणा।।

सन पन्द्रां सौ चालीस था, घटा खुशी की छाई थी।

नौ मई का शुभ दिन आया, घर-घर बँटी मिठाई थी।।

माताश्री जैवन्त नै एक, अद्भुत शक्ति जाई थी।

उदयसिंह के महला में भई, गावैं गीत लुगाई थी।

नाम घर्या प्रताप, था प्रतापी सब जग नै जाण्या।।2

महाराणा उदयसिंह छोटी रानी भटियाणी से अधिक पे्रम करते थे। मरते-मरते उन्होंने अपने बेटे जगमाल को राजगद्दी

www.ignited.in

सौंप दी थी। वह कायर और विलासी था। कालांतर में सभी सामन्तों ने उसे गद्दी से उतार दिया और महाराणा प्रताप को गद्दी पर बैठाया। इधर जगमाल अकबर से मिल बैठता है। उसी समय महाराणा शक्तिसिंह भी प्रताप से नाराज होकर अकबर से मिल बैठता है। अकबर और महाराणा प्रताप के मध्य युद्ध छिड़ गया। उस समय प्रताप अपने सैनिकों के समक्ष भीष्म प्रतिज्ञा करते हुए कहता है-

''मातृभूमि के वीर सपूतो! बात मान लो मेरी।

माँ की रक्षा करणी सै, कर दो दुश्मन की ढेरी।

कूद पड़ो रणभूमि में इब, मत ना ल्याओ देरी।।

गीता का उपदेश हमने, करणा चाहिए याद आज।

मरेंगे तो सुरग मिलै, जीतेंगे तो मिलै राज।

हो ज्याओ तैयार वीरों, देश की बचाओ लाज।।3

मानसिंह उदयपुर महाराणा प्रताप से मिलने के लिए आते हैं। उनकी आवभगत की जाती है, लेकिन महाराणा प्रताप उनके साथ खाना नहीं खाते हैं, तो इस पर मानसिंह कुछ हो जाता है और कहता है-

होर्या सै घमंड तेरे, महाराणा प्रताप भाई।

थोड़े से दिन डटज्या, मालम पाट ज्यागी भाई।।4

21 जून, 1576 में महाराणा प्रताप और अकबर की फौज के बीच हल्दीघाटी में युद्ध होता है। एक तरफ अकबर के लगभग एक लाख सैनिक थे तो दूसरी तरफ महारायणा प्रताप के 22 हजार सैनिक थे। कविवर सांघीवाल ने हल्दीघाटी के युद्ध का वर्णन निम्न पंक्तियों में किया है-

उस ओड़ महाराणा के सैनिक थे बाईस हजार।

तोप ना, बंदूक ठारे भाले, बरछी तलवार।

फिर भी टूट पड़े दुश्मन पै, हौंसले का ले हथियार।

चाल्लै थीं, बंदूक तोप, रणभूमि में दमादम।

चमकती तलवार दीखै, बिजली की ज्युं चमाचम।

सुणै थे हुंकारे भाले चालते थे गमागम।।''5

महाराणा प्रताप की वीरता का वर्णन करते हुए कवि कहता है-

चेतक पै सवार राणा, लाद्दे थे लाशां के ढेर।

काट काट शाही सेना, गाजर मूली ज्यूं दी गेर।

खून की बहै थी नदी, आगे बढ़ता जा था शेर।

घबरा के अकबर की सेना, भाजण का देखै थी राह।

कह्या किसे नै, बादशाह खुद, बड़ी फौज ले पहुँचा आय।

होग्या फेर मैदान गर्म, मुगलों का बहया उत्साह।।6

महाराणा प्रताप के युद्ध कौशल और झालावीर की वीरता का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि इस महायुद्ध में महाराणा प्रताप बुरी तरह से मुगल सेना के बीच घिर जाते हैं तो महाराणा को बचाने के लिए झाला वीर राणा का मुकुट पहन लेता है और युद्ध में जूझ पड़ता है। इधर चेतक घोड़ा अपने स्वामी महाराणा प्रताप को लेकर पहाड़ी की तरफ कूच कर जाता है। कविवर सांघीवाल इसी दृश्य का वर्णन करते हुए कहते हैं-

राणा का मुकुट पहन, झाला वीर आग्गे आए।

धूल झौंकी आंख्या के माह, दुश्मन उसकी ओड़ छाए।

सैंकड़ों को मार काट्या, झालावीर हाए हाए।

चेतक घोड़ा ले स्वामी को, पहाड़ी पर तै कूद भाग्या।

दो मुगल दौड़े पाच्छै, शक्तिसिंह भी गेल लाग्या।

दोनूं मुगल मार दिए, भाइयां का पे्रम जाग्या।।

हल्दी घाटी के इस युद्ध में अकबर की सेना के 50 हजार सैनिक मारे गए। महाराणा का परिवार घास-फूस की रोटी खाकर अपना निर्वाह करता है। एक दिन की बात है कि एक बिल्ला महाराणा की लड़की की रोटी छीनकर ले भागा। कवि इस घटना का वर्णन करते हुए कहता है-

तीन दिन की थी भूखी, रोटी थी सूकी साकी।

लेग्या खोस कै उसने भी हे यू बिल्ला डाकी।।

कोन्या रही बाकी देख कै, या खींचा ताणी।

जिनके बालक भूखे रोवै, के सै जिन्दगानी।।7

जंगल में रहते-रहते महाराणा प्रताप और उनका परिवार दाने-दाने का मोहताज हो गया था। बच्चे भूख से बिलखते थे। राणा जी लाचार हो चुके थे। मजबूर होकर महाराणा ने अकबर

www.ignited.in

को संधि का पत्र लिखा, जिसे पढ़कर अकबर बड़ा खुश होता है। वह उस पत्र को पृथ्वीराज चैहान के सामने सुनाता है तो उसे विश्वास नहीं होता कि यह पत्र महाराणा ने ही लिखा है। खैर! समय करवट लेता है। भामाशाह नामक महादानी व्यक्ति 20 हजार अशर्फी और 25 लाख रुपए महाराणा को सौंपता है, जिससे महाराणा के मन में एक नई चेतना और नए उत्साह का संचार हुआ। महाराणा ने दुबारा जंग का बिगुल बजा दिया और उन्होंने 32 किले जीतकर अपने वश में किये। वे मांडलगढ़ और चित्तौड़गढ़, इन दो किलें को नहीं जीत सके। कवि का कथन है-

जीत लिया मेवाड़ सब, युद्ध कर्या बेजोड़।

किले शेष दो रह गए, मांडलगढ़-चित्तौढ़।।

मांडलगढ़-चित्तोड़, जीत की कोशिश जारी।

मृत्यु पहुंची आण, हुई एकदम लाचारी।।

कहता 'सांघीवाल' छोड़ दो गफलत भई।

मृत्यु शीश सवार, जन-जन की करो भलाई।।8

महाराणा प्रताप का अंतिम समय निकट आ गया था। मृत्यु शैय्या पर लेटे हुए उन्होंने अंतिम इच्छा व्यक्त की थी कि चित्तौड़गढ़ पर भी उनका झंडा लहराना चाहिए। अंतिम सांस लेते हुए महाराणा जी जन-जन को संदेश देते हुए कहते हैं-

जीणा सै दो दिन भाई, संभल कै चलणा।

धर्म कर्म तै नाता जोड़ो, पाप कर्म सब छोड़ो।

हो ज्यागी सफल कमाई, संभल के चलना।

जन्मभूमि जननी लै प्यारी, रहगे किले दो हुई लावारी।

मौत निभाणी आई, संभल के चलना।।9

19 जनवरी, 1597 को महाराणा जी स्वर्ग सिधार गए। कवि का कथन है-

पन्द्रह सौ सत्तानवे, उन्नीस जनवरी मास।

महाराणा प्रताप ने किया स्वर्ग में वास।।10

प्रस्तुत लोकनाट्य भाषा, भाव और प्रस्तुति की दृष्टि से अनुपम बन पड़ा है। हरियाणवी भाषा का सहज सरल व भावोत्पादक रूप इस लोकनाट्य में देखा जा सकता है। कविवर सांघीवाल ने इस कृति में लोकोक्ति और मुहावरों का सटीक प्रयोग किया है। पद लालित्य पद-पद पर निहारा जा सकता है।

सारस्वत मोहन 'मनीषी' कृत 'एक हकीकत और' उक्त रचना खंडकाव्य है जिसका प्रकाशन किताबघर, नई दिल्ली से सन् 1996 में हुआ। इस काव्य की भूमिका में डाॅ. विजयेन्द्र स्नातक लिखते हैं- ''अभिव्यंजना कौशल के स्तर पर यह काव्य प्रसाद और माधुर्य गुण से ओतप्रोत है। यह काव्य जागृति, बल और बलिदान की प्रेरक भावना से भरा हुआ है, जिसे पढ़कर हमारी धमनियों में आज भी ओज और तेज का रक्त प्रवाहित हो उठता है।''11

प्रस्तुत खंडकाव्य में दूला भील के बलिदान की कहानी है। दूला इस खंडकाव्य का नायक है। दूला के पावन कत्र्तव्यनिष्ठा और उत्सर्ग भावना का वर्णन कवि ने बड़े मनोयोग से किया है। हल्दी घाटी की हार के पश्चात् सिसोदिया वंश के सूरज महाराणा प्रताप छिपते-छिपते अरावली के वनांचलों में भटक रहे थे। साथ थे मुट्ठीभर सैनिक, बेटा अमर सिंह, बिटिया चम्पा और महाराणा की प्राणेश्वरी महाराणी। भूख शांत करने हेतु नन्हें बच्चों को घास की रोटी दी जाती थी। एक दिन बिलाव रोटी लेकर भाग गया। भाई-बहन टुकर-टुकर देखते रहे। उनके मुख से रोटी-रोटी शब्द निकलता रहा। यह 'रोटी' शब्द ही इस खंडकाव्य का प्रेरणास्त्रोत है।

प्रस्तुत खंडकाव्य में महाराणा प्रताप के व्यक्तिगत भावों की प्रस्तुति की गई है। महाराणा भारत माँ के लाडले सपूत थे, जिन्होंने तन-मन-धन सब कुछ मातृभूमि के लिए अर्पित कर दिया था। महाराणा प्रताप के दृढ़ संकल्प का परिचय देते हुए कवि कहता है-

मैंने माँ का दूध पिया है, धरती माँ का पानी।

मातृभूमि पर हँसते-हँसते दूँगा भेंट जवानी।

सोना चाँदी के बर्तन क्या पत्तल पर खाऊँगा।

पिंजरे का तोता बनकर मैं गीत नहीं गाऊँगा।।12

महाराणा प्रताप में देशभक्ति कूट-कूट कर भरी हुई है। वे धरती माँ को ही अपना बिछौना मानते हैं। वे बनजारा बनकर क्रांतिगान करने का आहवान करते हुए कहते हैं कि-

बिस्तर नहीं, नहीं कुछ चिंता धरती पर सोऊँगा।

www.ignited.in

मैं बंजारा गाते-गाते क्रांति राग बोऊँगा।।13

महाराणा प्रताप दृढ़ संकल्प करते हुए कहते हैं कि यदि उन्हें मातृभूमि के गौरव के लिए घास की रोटियाँ भी खानी पड़ें तो वह उसे मंजूर है। कवि महाराणा के वैयक्तिक संकल्प को प्रस्तुत करते हुए कहता है-

रोटी अगर नहीं मिलती तो भूखे ही रह लेंगे।

मातृभूमि की खातिर यह संकट सह लेंगे।।

घास-फूस खा लेंगे, पी लेंगे झरनों का पानी।

लेकिन कभी न मरने देंगे हम नयनों का पानी।।14

जब भूख से उसके बच्चे बिलबिलाने लगते हैं तो वे विवश होकर अकबर को पत्र लिख देते हैं। महाराणा की व्यक्तिगत संवेदना को प्रस्तुत करते हुए कवि कहता है-

दो बच्चों की भूख देखकर मैंने खत लिख डाला।

अपने ही हाथों अपने पर मारा ज्यों भाला।

मैं कितना कायर हूँ अकबर को चिट्ठी लिख डाली।

इस माटी के फूल वीर कायर निकला माली।।15

महाराणा ने अकबर को जो पत्र लिखा उस पर पश्चाताप करते हुए कवि कहता है-

आँसू से आँखें धो राणा नंदन बन बैठे थे।

प्रायश्चित के पावक में जल कुंदन बन बैठे थे।।

संधि पत्र अकबर जो लिखा समझ लेना झूठा था।

आँसू देख बाल-बच्चों के मैं खुद से रूठा था।

समर क्षेत्र में वीर मिला करते है यह लिखना है।

राणा नहीं बिका न बिकेगा कभी नहीं बिकना है।16

कविवर 'मनीषी' ने मुगल सेना के अत्याचारों का भी वर्णन किया है। जब दूला महाराणा के बच्चों के लिए रोटी ले जा रहा था, तो रास्ते में युगल सैनिकों ने महाराणा प्रताप का अता-पता पूछा तो दूला साफ मनाकर देता है। इस बात से मुगल सैनिक नाराज हो जाते हैं और तलवार से दूले के हाथ-पैर काट देते हैं। कवि के उद्‌गार देखिए-

तभी वार फिर हुआ देहे से पैर अलग कर डाला।

फुदक फुदक कर एक टांग पर दौड़ा हिम्मत वाला।

तभी दूसरी टाँग कटी पर कब संघर्ष रुका था।

नीचों की नीचता देखकर दूला नहीं झुका था।।17

समर्पण और त्याग कर भारतीय संस्कृति में विशेष महत्त्व है। दोनों पैर कट जाने पर भी घिसट-घिसट कर दूला महाराणा प्रताप के दोनों बच्चों के लिए रोटी पहुँचाने का उपक्रम करता है। रोटी के थैले को मुँह से थामे हुए अपने वायदे को पूरा करने के लिए कृतसंकल्प है। दूला के माध्यम से भारतीय संसकृति के त्याग और समर्पणशीलता को व्यक्त करते हुए कवि कहता है-

दोनों पैर काटकर दूला पहले से लम्बा था।

घिसट-घिसट घुटनों पर बढ़ता धीरज का खंभा था।

मुख में रोटी वाला थैला कसकर पकड़ रखा था।

दूला ने संकल्प-वचन को मन से जकड़ रखा था।18

कविवर सारस्वत मोहन ने अपनी रचना 'एक हकीकत और' को सजाने और संवेदना को संवारने का सुंदर प्रयास किया है। महाराणा प्रताप एक ऐतिहासिक महापुरुष हैं। उनके जीवन से जुड़ी हुई दूला की त्यागमयी कहानी से प्रस्तुत करने में कवि ने सारस्वत कार्य किया है। महाराणा प्रताप के व्यक्तिगत विचारों, मुगलकालीन शासन, सांस्कृतिक उत्थान-पतन, प्रकृति प्रेरम, आधुनिकता बोध से संवलित यह खंडकाव्य अनेक पहलुओं को उजागर करता है। भाषा, छंद, अलंकार, बिम्ब, कहावत-मुहावरे, सूक्ति, काव्यगुण आदि शैल्पिक उपादानों का इस काव्य में सुन्दर प्रयोग हुआ है। भाषा, भाव एवं प्रस्तुति की दृष्टि से यह काव्य अनुपम बन पड़ा है। कथ्य एवं शिल्प की दृष्टि से यह खंड काव्य हिंदी साहित्य की चर्चित एवं महत्त्वपूर्ण रचना है।

रामभगत लांगायन कृत 'महाराणा प्रताप'

प्रस्तुत विस्तृत निबंध में रामभगत लांगायन ने भारत के वीर सेनानी महाराणा प्रताप की यश, कीर्ति का विस्तृत रेखांकन किया गया है। लेखक ने राष्ट्रीय चेतना के महापुरुषों का भावपूर्ण वर्णन किया है। वे लिखते हैं- ''हमारे महावीर नायकों ने अपनी वीरता को गिरवी नहीं रखा, बल्कि अपने देश के सम्मान तथा गौरव के लिए लगाया। उन्हीं में से महानायक

www.ignited.in

महाराणा प्रताप का भव्य स्वरूप हमारे सामने हैं, जिन्होंने मेवाड़ को स्वतंत्र कराने के लिए अनेक कष्ट सहे, लेकिन मुगलों के सामने घुटने नहीं टेके। उनका आदर्श चरित्र आज भी पे्ररणादायक है।19

महाराणा प्रताप मेवाड़ के राजा थे। उनका जन्म 9 मई, सन् 1540 में हुआ। उनके पिता का नाम महाराणा उदयसिंह था। राजस्थान के सामंतों ने महाराणा प्रताप को मेवाड़ की राजगद्दी पर बैठाया।... महाराणा प्रताप अपनी प्रजा की देखभाल संतान तुल्य करने थे। उनके राज्य में प्रजा सुखी थी। उनके यश को देखकर मुगल शासक अकबर उनसे घृणा, द्वेष व शत्रुता करने लगे थे। कालांतर में उन्होंने राजा मानसिंह को बड़ा लालच देकर अपनी ओर खींच लिया जो महाराणा प्रताप का दुश्मन बन चुका था। कुल कलंकी मानसिंह ने अपनी सेना लेकर अकबर के सहयोग से मेवाड़ पर चढ़ाई कर दी। परन्तु शेर चुपचाप कैसे रह सकता था? अतः राणा ने भी अपनी सेना को आज्ञा दी कि मानसिंह की सेवा का डटकर मुकाबला किया जाए। अकबर की यह चाल थी कि भाई को भाई से लड़ा दो और अपना मकसद पूरा कर लो।

मानसिंह हाथी पर सवार होकर सेना का संचालन कर रहा था तो दूसरी ओर महाराणा भी चेतक घोड़े पर बैठकर युद्ध के मैदान में लड़ रहे थे। राणा के घोड़े चेतक ने अपने दोनों पैर हाथी पर रख दिये और राणा के प्रहार से मानसिंह की तलवार टूट गई। यदि राणा चाहते तो उसका अंत हो जाता। परन्तु महाराणा प्रताप धर्मवीर, आदर्शवादी व महावीर पुरुष थे। राणा ने निहत्थे पर वार करना धर्म विरुद्ध समझा। वह पापात्मा मानसिंह बच निकला। वीर सेनानी महाराणा प्रताप टस से मस नहीं हुए और वे मैदान में डटे रहे। इस महासमर में उनका चेतन घायल हो गया और राणा भी घायल हो चुके थे।20

हल्दीघाटी के मैदान में घायल चेतक और महाराणा भाग रहे थे और उनके पीछे दो मुसलमान सैनिक दौड़ रहे थे। उनके भाई शक्तिसिंह ने उन दोनों को मौत के घाट उतार दिया और महाराणा के चरणों में गिर कर क्षमा मानी क्योंकि वह अकबर के साथ मिल बैठा था। कुछ ही समय में चेतक के प्राण पखेरू उड़ गये थे। शक्ति सिंह ने अपना घोड़ा दिया और महाराणा को वहाँ से चले जाने के लिए कहा।

राज्य चला गया था। सिर छुपाना मुश्किल था। महाराणा अपने परिवार सहित जंगलों में रहने लगे। वहाँ घास की रोटियाँ खाकर अपना गुजारा करने लगे। मखमली नरम बिछौने ने पथरीली भूमि पर घास-फूस का स्थान लिया। जीवन बड़े कष्ट में व्यतीत हुआ। एक दिन महाराणा गुफा में बैठे मेवाड़ की आजादी के बारे में सोच रहे थे। महाराणा की पत्नी राजनन्दनी अपने बच्चों को घास की रोटियाँ खिला रही थी। इतने में एक बिलाव आया और राजकुमारी चम्पा के हाथ से रोटी छीनकर भाग निकला। वह छोटी बच्ची चम्पा महाराणा के पास रोती हुई आई और बोली कि ‘‘मैं तीन दिनों से भूखी हूँ, एक रोटी मिली, उसे भी छीनकर बिलाव ले गया। पिताजी! मुझे बहुत जोर की भूख लगी है। मुझे बताओ वह कौन शत्रु है, जिसने हमारा ऐसा हाल किया है। मुझे तलवार दो उसे खत्म करूँगी और अपने राजमहल में रहूँगी।’’21

महाराणा प्रताप का हृदय वज्र से भी कठोर था। परन्तु बच्ची की भूख से बनी दुर्दशा को देखकर आँसू रोक नहीं पाए। पत्थर भी मोम बनकर पिघल गया। ... महाराणा ने सोचा कि ऐसी जिंदगी से भला है दुश्मन के साथ लड़कर वीरगति प्राप्त करना। महाराणा यह सोचकर चल पड़े। रास्ते में उन्हें महादानी भामाशाह मिले। वे हाथ जोड़कर कहने लगे- ‘‘महाराज! आपका दुःख देखा नहीं जाता। हमने भी आपका नमक खाया है। यदि मेरा धन मातृभूमि और आपके काम नहीं आ सके तो फिर ऐसे धन का क्या फायदा? महाराणा ने भामाशाह का धन स्वीकार करते हुए कोटि-कोटि धन्यवाद किया। इसके बाद राणा ने अपनी सेना तैयार की और अनेक किलों पर कब्जा किया।22

महाराण ने अंतिम दिन अत्यंत कष्ट में व्यतीत हुए। वे बीमार रहने लगे। उन्हें इस बात का अत्यंत दुःख था कि वे मेवाड़ को पुनः जीत न सके। 19 जनवरी सन् 1597 में उनका देहावसान हो गया। उनकी मृत्यु पर अकबर बादशाह ने उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की।23

महाराणा प्रताप, वास्तव में महान वीर व भारतीय संस्कृति के प्रतीक थे। उन्होंने जंगल में रहना स्वीकार किया परन्तु राजमहल में रहने के लिए दासता स्वीकार नहीं की। कठिन से कठिन समय में भी विचलित न होकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने की बात सोचते थे। वे अपनी शूरता के लिए सदैव अमर रहेंगे।24

संदर्भ

1. भानुदत्त त्रिपाठी ‘मधुरेश’, ‘सहकार’ (राष्ट चेतना अंक), पृ. 13

2. भारतभूषण सांघीवाल, हरियाणवी काव्य ग्रथावली, पृ. 207

3. वही, पृ. 211-212

www.ignited.in

4. वही, पृ. 221

5. वही, पृ. 222-223

6. वही, पृ. 223

7. वही, पृ. 225

8. वही, पृ. 231

9. वही, पृ 231-232

10. वही, पृ. 232

11. विजयेन्द्र स्नातक, 'एक हकीकत और' भूमिका, पृ. 9

12. सारस्वत मोहन मनीषी, 'एक हकीकत और', पृ. 72

13. वही, पृ. 73

14. वही, पृ. 73

15. वही, पृ. 88

16. वही, पृ. 51

17. वही, पृ. 87

18. वही, पृ. 87

19. रामभगत लांगायन, विश्व की महान विभूतियाँ, पृ. 572

20. वही, पृ. 573

21. वही, पृ. 274

22. वही, पृ. 275

23. वही, पृ. 275

24. वही, पृ. 276

Corresponding Author

Suman Rani*

M.A. (Hindi) NET, B.Ed., Sirsa